कई वर्षों की बात है। एक पुराना गाँव था। एक आदमी न जाने कहाँ से भटकता हुआ दूर-दराज के उस गाँव में आ पहुँचा था। गाँव के कुत्तों ने जब चीथड़ों में लिपटे उस अजीब आदमी को देखा तो उन्हें वह कोई पागल लगा । वे उसपर बेतहाशा भौंकने लगे। गाँव के बच्चे खेल रहे थे। कुत्तों की देखा-देखी गाँव के बच्चे भी पूरी दोपहर उसे छेड़ते और तंग करते रहे । आश्चर्य की बात यह थी कि वह आदमी उन बच्चों को कुछ बोल नहीं रहा था । संयोग से किसी भले आदमी ने गाँव के बच्चों को उसपर पत्थर फेंकते हुए देख लिया। जब वह भला आदमी उस आदमी के करीब गया तो उसके चेहरे पर मौजूद खोएपन के भाव के बावजूद उसे उस में गरिमा के चिह्न दिखे । 'यह आदमी पागल नहीं हो सकता'- उसने सोचा। गाँव के उस आगंतुक भले व्यक्ति ने उस आदमी से उसका नाम-पता पूछा, पर वह कोई उत्तर नहीं दे सका। वह केवल इतना बोल पाया, "शायद मैं खो गया हूँ !" यह सुनते ही गाँव के उस भले व्यक्ति ने निश्चय किया कि वे सब उसे 'खोया हुआ आदमी' कहकर बुलाएँगे ।

खोया हुआ आदमी इतना खोया था, इतना खोया था कि उसकी पूरी स्मृति का लोप हो चुका था। उसके जहन से उसका नाम और पता पूरी तरह खो चुके थे । न उसे अपनी जाति पता थी, न अपना धर्म । लेकिन अपने खोएपन में भी उसमें परिचित-जैसा कुछ था, जो उसे अपना-सा बना रहा था। लिहाजा जब उसे गाँव के अन्य लोगों के पास ले जाया गया तो उसे देखते ही सभी एक स्वर में बोल उठे, "अरे, यह खोया हुआ आदमी तो बेहद अपना-सा लग रहा है।" उन्होंने उसे अपने ही गाँव में रख लेने का फैसला किया। वह आदमी भी उस गाँव में रहने के लिए तैयार हो गया ।

खोए हुए आदमी की आवाज बहुत मधुर थी। कभी-कभी वह अपनी सुरीली आवाज में कोई पुराना गीत गाता था । उस गाँव की गाय-भैंसें उसके गीत की स्वर लहरियों से मंत्रमुग्ध होकर ज्यादा दूध देने लगतीं। गाँव के बच्चे उसका गीत सुनकर उसकी ओर खिंचे चले आते । गाँव के बड़े-बुजुर्गों को भी उसके गीत उनकी युवावस्था के सुंदर अतीत की याद दिलाते । गाँव के लोगों ने पाया कि जब से वह खोया हुआ आदमी वहाँ आया था, गाँव के फूल और सुंदर लगने लगे थे, गाँव की तितलियाँ ज्यादा मोहक लगने लगी थीं, गाँव के जुगनूँ ज्यादा रोशन लगने लगे थे। गाँव के बच्चे भी अब ज्यादा खुश रहने लगे थे क्योंकि बच्चों को वह सम्मोहित कर देने वाले कमाल

के गीत सुनाता था। गाँव के कुत्ते अब उसके सगे गए थे। वे उसके आस-पास ऐसे चलते जैसे उसे 'गार्ड ऑफ ऑनर' दे रहे हों।

उन्हीं दिनों गाँव की एक वृद्धा को सपना आया कि वह खोया हुआ आदमी दरअसल उसका ही बेटा था जो बचपन में कहीं खो गया था। वह एक गरीब स्त्री थी, जो घास काटकर, उपले थापकर और पेड़-पौधों की लकड़ियाँ इकट्ठा कर अपना जीवन चलाती थी। उसने खोए हुए आदमी को अपने सपने के बारे में बताया। खोए हुए आदमी ने खुशी-खुशी उस वृद्धा को अपनी माँ मान लिया और उसके साथ रहने लगा। खोए हुए आदमी ने अपनी 'माँ' की इतनी सेवा की कि वृद्धा को लगा कि उसका जीवन धन्य हो गया।

धीरे-धीरे गाँववालों को खोए हुए आदमी के कई गुणों के बारे में पता चलने लगा। वह पशु-पक्षियों से बातें करता प्रतीत होता । लगता था जैसे वह पशु-पक्षियों की भाषा जानता हो। वह आँधी, तूफान, चक्रवात आने, ओले पड़ने या टिड्डियों के हमले के बारे में गाँववालों को पहले ही आगाह कर देता । उसकी भविष्यवाणी के कारण गाँववाले मुसीबतों से बच जाते । जब एक बार गाँव में सूखे की स्थिति उत्पन्न हो गई तो खोए हुए आदमी ने आकाश की ओर देखकर न जाने किस भाषा में किस देवता से प्रार्थना की। कुछ ही समय बाद गाँव में मूसलाधार बारिश होने लगी । सूखी-प्यासी मिट्टी तृप्त हो गई। बच्चे-बड़े सभी इस झमाझम बारिश में भीगने का भरपूर आनंद लेने लगे । उस दिन से खोया हुआ आदमी गाँव में सबका चहेता हो गया ।

गाँव के किनारे कुछ घर दलितों के थे और कुछ मुसलमानों के । गाँव की कुछ जाति के लोग उनसे अलग रहते थे। खोए हुए आदमी ने दलितों और मुसलमानों से भी मित्रता कर ली। वह दैनिक कामों में उनकी मदद कर देता । उनके कर्तव्य समझाता । उन्हें उनके अधिकारों के बारे में बताता। देखते-ही-देखते गाँव के दलित अपने हक की माँग करने लगे। उधर गाँव के बड़े-बूढ़ों पर भी खोए हुए आदमी के समझाने का असर हुआ। धीरे-धीरे दलितों का शोषण बंद हो गया। आपसी भाईचारा बढ़ने लगा। गाँव के सभी जाति-धर्म के लोग, हिंदू और मुसलमान मिल-जुलकर ईद और होली-दीवाली मनाने लगे। इस तरह गाँव में सांप्रदायिकता और जातिवाद को दूर करने में खोए हुए आदमी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । सभी प्रकार के झगड़े-टंटे समाप्त हो गए। यदि कोई विवाद होता भी तो बैठकर वे आपस में निपटा लेते ।

उसके आने से गाँव में एक और बदलाव आया। पहले गाँव में स्त्रियों की दशा ठीक नहीं थी। खोए हुए आदमी ने स्त्रियों को अपने अधिकारों केलिए लड़ना सिखाया। गाँव की सभी स्त्रियाँ, पुरुषों की ज्यादतियों के खिलाफ एकजुट हो गईं। खोए हुए आदमी के समझाने का असर भी हुआ। धीरे-धीरे स्त्रियों के विरुद्ध अत्याचार समाप्त हो गए। उन्हें भी सम्मान मिलने लगा। वे भी बड़ों की बातों को महत्त्व देने लगीं।

इस गाँव से करीबी कस्बे की दूरी तीन दिन की थी। गाँव में खेती की जमीन तो थी पर कभी अच्छा बीज नहीं मिलता तो कभी खाद नहीं मिलती । खोए हुए आदमी ने गाँववालों को प्रेरित किया कि वे गाँव में ही अच्छे बीज और जैविक खाद की दूकान खोल लें। वह खुद लोगों के खेत में मेहनत करता, खेती-बाड़ी में उनकी मदद करता। गाँववाले भी खूब परिश्रम करने लगे। उसकी मदद गाँववालों के लिए खुशहाली ले आई। गाँव का तालाब मछलियों से भर गया । गाँव के पेड़ फलों से लद गए। खेतों में फसलें लहलहाने लगीं । मौसम अच्छा बना रहा। गाँववालों ने इन सबका श्रेय खोए हुए आदमी को दिया। उन्हें लगा जैसे उसकी उपस्थिति में बरकत थी। धीरे-धीरे वह पूरे इलाके में लोकप्रिय हो गया। पड़ोस के अन्य गाँवों के लोग भी उसके प्रशंसक बन गए ।

शुरू-शुरू में कुछ लोग उसे प्रश्नवाचक निगाहों से देखते थे पर खोए हुए आदमी का चेहरा इतना विश्वसनीय और उसका व्यवहार इतना सरल और सहज था कि धीरे-धीरे उसके आलोचक भी उसके प्रशंसकों में बदल गए । लोगों को लगता था कि उसके पास कोई जादुई शक्ति है जिससे वह आसानी से समस्याओं के हल ढूँढ़ लेता है। हालाँकि खोए हुए आदमी ने हमेशा इस बात का खंडन किया। वह हर सफलता को गाँववालों के कठिन परिश्रम का परिणाम बताता था ।

वह लोगों से कहता - "आप सबके पास भी वही शक्तियाँ हैं, खुद को पहचानो । अपनी ऊर्जा को रचनात्मक और सकारात्मक कामों में लगाओ। जुड़ो और जोड़ो ।" इस तरह खोए हुए आदमी ने इलाके के लोगों में नया विश्वास भर दिया । लोगों में नया जोश, नया उत्साह आ गया ।

पर अंत में वह दिन भी आ पहुँचा। एक रात मौसम बेहद खराब हो गया। बादलों की भीषण गड़गड़ाहट के साथ आकाश में बिजली कड़कने लगी। तभी कई सूर्यों के चौंधिया देने वाले प्रकाश ने रात में दिन का भ्रम उत्पन्न कर दिया ।

फिर वज्रपात जैसी भयावह गड़गड़ाहट के साथ गाँव में कहीं बिजली गिरी । लोग अपनी साँसों की धुकधुकी के बीच अपने-अपने घरों में दुबके हुए थे। सारी रात मौसम बौराया रहा। लोगों का कहना है कि उस रात गंधक की तेज गंध पूरे गाँव में फैल गई थी और मकानों की खिड़कियों-दरवाजों की झिर्रियों में से घुसकर यह सभी घरों में समा गई

थी। बाद में पता चला कि यह शहर के कारखानों से गैस रिसाव एवं विस्फोट का दुष्परिणाम था ।

सुबह जब मौसम साफ हुआ तब गाँववालों ने पाया कि वह खोया हुआ आदमी अब उनके बीच नहीं था। वह गायब हो चुका था । गाँववालों ने उसे बहुत ढूँढ़ा पर उसका कोई पता नहीं चला। न जाने उसे जमीन निगल गई थी या आसमान खा गया था। उसकी तलाश में आस-पास के गाँवों में गए सभी लोग खाली हाथ लौट आए। गाँव की गलियाँ उसके बिना सूनी लगने लगीं। पशु-पक्षी उसके बिना उदास हो गए। गाँव के बच्चे उसके बिना बेचैन लगे। गाँव के कुत्तों की आँखों में भी आँसू थे ।

दुखी गाँववालों ने खोए हुए आदमी की याद में उसकी एक मूर्ति बनाकर गाँव के बीचोबीच स्थापित कर दी। पंचायत की सभी बैठकें अब इसी मूर्ति के पास हुआ करतीं । गाँववालों ने प्रण लिया कि वे उस खोए हुए आदमी के दिखाए मार्ग पर चलेंगे। आज भी यदि आप उस गाँव में जाएँगे तो आपको उस खोए हुए आदमी की वहाँ स्थापित मूर्ति दिख जाएगी ।

लेकिन आपको असली बात बताना तो मैं भूल ही गया । खोए हुए आदमी के गायब होने के कुछ समय बाद जब जनगणना अधिकारी जनगणना के काम से इस गाँव में पहुँचे तो किसी को भी न तो अपनी जाति याद थी, न अपना धर्म याद था । धर्म और जाति के बारे में उनकी स्मृतियाँ उस खोए हुए आदमी के साथ ही जैसे सदा के लिए खो चुकी थीं। काश, अपने गाँव-शहर में हमें भी ऐसा 'खोया हुआ आदमी' मिल जाता !

इस कहानी का हर एक छोटा-छोटा लाइन ऊपर हिंदी में नीचे उसका प्रॉन्प्ट इंग्लिश भाषा में पूरा डिटेल के साथ और एक इमेज कैरेक्टर एक जैसा होना चाहिए इसीलिए प्रॉन्प्ट लिखते समय इस बात का ध्यान रखें जिससे मैं एक बेहतरीन वीडियो बना सकूं

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए:

खोए हुए आदमी के गीत से प्रभावित होने वाले : गाय,भैसें बच्चें बड़े-बुजुर्ग

(२) उत्तर लिखिए :

खोए हुए आदमी के आने से गाँव की बदली हुई स्थिति – १)गाँववाले खूब मेहनत करने लगे।

२))गाँव का तालाब मछलियों से भर गया। ३))गाँव के पेड़ फलों से लद गए।४)खेतों मेंफसलों लहलहाने लगीं।

(३) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

१)भविष्यवाणी,

प्रश्न :-खोया हुआ आदमी प्राकृतिक आपदाओं के बारे में क्या करता था ?

२)झमाझम बारिश,

प्रश्न :- किस मौसम में भिगने का आनंद आता है?

३)खुशहाली,

प्रश्न :- त्योंहार हमारे जीवन मेंक्या लाते है ?

४) गंधक

प्रश्न :-किस की तेज गंध पुरे शहर में फैल रही थी ?

(४) दिए गए निर्देश के अनुसार परिवर्तन कीजिए:

विद्वान लिंग = विदुषी , पर्यायवाची ,- बुद्धिमान .वचन-विद्वानो , विरुद्धार्थी- मूर्ख

अभिव्यक्ति

'मानवता ही सच्चा धर्म हैं' पर अपने विचार लिखिए ।

“मानवता” शब्द का सरल शब्दों में मतलब है, इंसानियत दूसरे मनुष्य, प्राणियों के प्रति दया, सेवाभाव, कल्याण की भावना और परोपकार को मानवता कहा जाता है। यह सच है कि मानवता की सेवा करना ही सच्चा धर्म है मानवता हमें मानव मात्र से नहीं अपितु संसार के हर प्राणी से प्रेम करना सिखाती है। जाति, संप्रदाय, वर्ण, धर्म, देश आदि के विभिन्न भेदभाव के लिए यहां कोई स्थान नहीं है। मानव धर्म सभ्यता और संस्कृति की एक प्रकार की रीढ़ की हड्डी है। इसके बिना सभ्यता व संस्कृति का विकास कल्पना मात्र ही है। प्रत्येक में एक ही विश्व शासक प्रभु का प्रतिबिंब दिखलाई देता है, यह समझकर मनुष्य की ओर आदर भावना बनाए रखें।

विभिन्न तीर्थों की यात्रा करने से अच्छा है कि व्यक्ति किसी दुःखी-पीड़ित मानव की सेवा करे। ईश्वर निश्चित रूप से उसके अधिक निकट होगा। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण विद्यमान हैं, जिन्होंने मानवता की सेवा के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया। इसमें कर्ण, मदर टेरेसा, महात्मा गाँधी का नाम उल्लेखनीय हैं। स्वार्थहीनता ही धर्म की कसौटी है।

जो मानवता की सेवा लाभ की अपेक्षा किए बिना करते हैं, वे निश्चित रूप से ईश्वर के अधिक निकट होते हैं।

मानवतावाद के संबंध में नेहरू ने कहा था, पर सेवा, पर सहायता और पर हितार्थ कर्म करना ही पूजा है और यही हमारा धर्म है यही हमारी इंसानियत है।' इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'मानवता ही सच्चा धर्म है' कि जिसमें मानव अन्य लोगों दुःख दर्द को महसूस करें और उनके सुखी जीवन के मार्ग में बाधक न बनकर उनके प्रगति व विकास पर बल दे।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए अव्ययों को रेखांकित करते हुए उनके भेद लिखिए :

१. उसके जहन से उसका नाम **और** पत्ता पूरी तरह खो चुके थे। --

उत्तर :-और समुच्चयबोधक अव्यय

२. ओह ! दिव्या मैं ठीक हूँ।

उत्तर :- ओह विस्मयादिबोधक अव्यय

३. उसकी भविष्यवाणी **के कारण** गाँववाले मुसीबतों से बच जाते ।

उत्तर :- के कारण क्रियाविशेषण अव्यय

४. **वहाँ** से तुलसीनगर पास पड़ता है।--

उत्तर :- वहाँ क्रियाविशेषण अव्यय

५. **काश**, अपने गाँव-शहर में हमें भी 'खोया हुआ आदमी' मिल जाता !

उत्तर :- काश विस्मयादिबोधक अव्यय

६. **कभी-कभी** मेरा मन उच्चाकाश में उड़ने वाले पक्षियों के साथ अनंत के ओर-छोर नापना चाहता है।

उत्तर :- कभी-कभी क्रियाविशेषण अव्यय

७. ब्लडप्रेशर भी ज्यादा है पर चिंता की कोई बात नहीं।

उत्तर :-पर समुच्चयबोधक अव्यय

८. इतनी **जल्दी** लौट जाते हैं।

उत्तर :- जल्दी क्रियाविशेषण अव्यय

(२) निम्नलिखित अव्ययों का सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

१. परंतु =दीपक आपसे हि मिळणे आया था परंतु आप शहर से बाहर थे।

२. अरेरे !=अरेरे !यहाँ क्या हो रहा है।

३. के समान= अंकिता कि ख़ुशी उसके बहन लता कि ख़ुशी के समान थी।

४. धीरे-धीरे = धीरे- धीरे साधू का यश चारों ओर फैल गया।

५. इसलिए= सीता ने पढाई में मेहनत कि थी इसलिये उसे अच्छे अंक मिले।

६. छि != छि !उसका व्यवहार बहुत ही असभ्य है,उसे सुधारना चाहिये।

७. ऊपर=वह सरोवर के किनारे बैठा और सितारों को ऊपर कि ओर देखता रहा।

८. के अलावा-सुशील के अलावा ,सभी छात्र ने परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया।

उपयोजित लेखन

'विश्वबंधुता वर्तमान युग की माँग' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

वैज्ञानिक प्रगति और उपलब्धियों के बल पर आज विश्व सिमटकर बहुत छोटा हो गया है। विभिन्न देशों के लोग आज एक-दूसरे के बहुत करीब आ गए हैं। किसी भी देश में कोई घटना होती है, तो उससे दूसरे देश भी प्रभावित होते हैं। आज लोगों का एक-दूसरे के देशों में आना-जाना और व्यापार व्यवहार बहुत सुलभ हो चुका है। लोगों में आपसी प्रेम-भाव भी बहुत है। पर कुछ शक्तियाँ ऐसी हैं, जिसके कारण लोगों के बीच जैसा सौहार्दस्थापित होना चाहिए वैसा नहीं हो पा रहा है। इसके कारण कई देशों में अशांति का वातावरण है।

आतंकवाद और युद्ध का भय उनमें से एक है। विश्व में लोगों में आपसी भाईचारे के प्रयास पहले भी होते रहे हैं और आज तो बहुत तेजी से जारी हैं। आज के युग में विश्वबंधुता की सबसे अधिक आवश्यकता है। आज विश्व विस्फोटकों के ढेर पर बैठा हुआ है। तरह-तरह के विनाशक अस्त्र-शस्त्रों का भय लोगों को सता रहा है,

जिसकी चोट में साग विश था जिसकी चपेट में सारा विश्व आ सकता है। इसलिए आज सभी देशों के बीच आपसी प्रेम-भाव और सौहार्द की अत्यधिक आवश्यकता है। इस बात को अब सभी देश समझने लगे हैं और इस दिशा में प्रयास भी शुरू हो गए हैं। विश्वबंधुता की भावना से ही विश्व में शांति और सौहार्द स्थापित हो सकता है।